इंसा भी क्या बला है

एक दिन हम गुजर रहे थे जिंदगी के मोड़ से,

कि अचानक ये खयाल आया "इंसा क्या है"।

क्या यह वही है जो सहारा देने से सिर पर चढ़ जाता है,

उपदेश देने पर मुड़कर बैठ जाता है।।

आदर करने पर खुशामद समझता है,

उपकार करने पर अस्वीका।र करता है

विश्वास करने पर हानि पहुंचाता है ,

क्षमा करने पर दुर्बल समझता है।।

प्यार करने पर आघात करता है,

दुख के समय सहयोग खोजता है।

और सुख के समय ईर्ष्या करता है,

मै परेशां हूं, यह सोचकर, कि मै भी इंसा हूं।।

सच, इंसा भी क्या बला है।

कितना बुरा है या कितना भला है।।

रमाकर झा, वैज्ञानिक "सी"